अरुंधति रॉय – लेखिका

अरुंधति रॉय का जन्म मेघालय के हरे-भरे शिलॉन्ग शहर की पहाड़ियों में हुआ था। बचपन से ही उनका दिल कहानियों की जादुई दुनिया में डूबा रहता। छोटी-सी अरुंधति आसमान को देखते हुए अक्सर सोचतीं, "मैं भी एक दिन ऐसी कहानी लिखूँगी, जो दिलों में घर कर जाए और पूरी दुनिया उसे याद रखे।"

जवान होकर अरुंधति दिल्ली आईं और वहाँ उन्होंने आर्किटेक्चर की पढ़ाई की। अक्सर सोचतीं, "मेरी असली पहचान तो कहानियाँ ही हैं। मुझे वो आवाज़ बनना है, जो दुनिया सुनना चाहती है, पर अनसुनी रह जाती है।"

अपने सपने को हक़ीक़त बनाने के लिए अरुंधति ने जी-जान लगा दी। आखिर एक दिन उनकी कलम से निकली "द गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्स"— एक ऐसी किताब जिसने पूरी दुनिया का दिल छू लिया। यह किताब इतनी अद्भुत और संवेदनशील थी कि अरुंधति को इसके लिए विश्वप्रसिद्ध मैन बुकर पुरस्कार मिला।

https://bharatkibetiyokikahaniyaan.com/

https://bharatkibetiyokikahaniyaan.com/

अरुंधति एक निडर समाजसेविका भी बनीं। उन्होंने महसूस किया कि सिर्फ़ लिखना ही काफ़ी नहीं, बल्कि सच बोलना और कमज़ोरों के लिए आवाज़ उठाना भी ज़रूरी है। वे गरीबों, आदिवासियों और उन लोगों की आवाज़ बनीं, जिनकी चीखें अक्सर अनसुनी रह जाती हैं। जब भी कोई नदी संकट में आई, कोई जंगल खतरे में पड़ा, या कोई इंसान अन्याय का शिकार हुआ, अरुंधति ने उनकी आवाज़ बनकर दुनिया के सामने खड़े होने की हिम्मत दिखाई।

अरुंधति रॉय की कहानी हर भारतीय को यह प्रेरणा देती है कि— "अपने दिल की आवाज़ पर भरोसा करो, अपने सपनों को हिम्मत से पूरा करो, और सच के लिए लड़ने से कभी मत डरो। क्योंकि जब तुम दिल से बोलोगे, तो पूरी दुनिया तुम्हें ज़रूर सुनेगी। कोई कोशिश व्यर्थ नहीं जाती।"

READ MORE STORIES ON
www.bharatkibetiyokikahaniyaan.com/